जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

हमारा यह भव, भव का अभाव करने के लिये है, किसी पक्ष या सम्प्रदाय के पोषण के लिये नहीं।

- आप कुछ भी कहो, पृष्ठ -39

वर्ष : 26, अंक : 1 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अप्रैल (प्रथम) 2003 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25/-, एकप्रति : 2/-

पूरे देश में अष्टान्हिका पर्व सानन्द सम्पन्न

1. जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्री दि. जैन महिला मण्डल, बापूनगर ने तत्त्वार्थसूत्र मण्डल विधान का आयोजन किया।

इस अवसर पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के प्रात: समयसार पर, दोपहर में पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा द्वारा तत्त्वचर्चा तथा सायंकाल पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् डॉ. दीपकजी जैन के नाटक समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रतिदिन सायंकाल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा जिनेन्द्र भक्ति होती थी।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में उपाध्याय कनिष्ट के विद्यार्थियों ने सम्पन्न कराये।

2. जबेरी बाजार (मुम्बई) - यहाँ सीमंधर जिनालय में समाज के विशेष आग्रह पर दिनांक 11 से 20 मार्च तक करणानुयोग के विशेषज्ञ ब्र. यशपालजी जैन जयपुर के प्रात: एवं सायंकाल गुणस्थान विषय पर आध्यात्म से परिपूर्ण मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही प्रात:काल प्रवचन के उपरान्त इसी विषय पर कक्षा भी ली गई।

ज्ञातव्य है कि इसी बीच अध्यात्म स्टडी सर्किल के विशेष आमंत्रण पर दिनांक 16 मार्च को आपका एक प्रवचन बालकेश्वर में तथा ताड़देव निवासी जैनसमाज के आग्रह पर 'पाप, पुण्य और धर्म' विषय पर आपका एक प्रवचन 19 मार्च को जैन बोर्डिंग ताड़देव में भी हुआ।

जबेरी बाजार के अतिरिक्त श्री दिगम्बर जैन मुमुक्ष मण्डल बृहन्मुम्बई के संयोजकत्व में -

दादर में पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, **बोरीवली** में ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' भोपाल, **दहीसर** में पण्डित चन्दूभाई फतेपुर, **घाटकोपर** में पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, **मलाड़** में पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया एवं श्री अश्विनभाई, **भायंदर** में श्री बी. एल. जैन कोटा के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ समाज को मिला।

4. शिरडशहापुर (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर हिंगोली से एडवोकेट पण्डित जयकुमारजी दोडल पधारे। आपके प्रात: दोपहर एवं रात्रि में प्राचीन आचार्यों की टीकाओं का सहारा लेते हुये तत्त्वार्थसूत्र पर विशेष प्रवचन एवं कक्षायें ली गई। रात्रिकालीन प्रवचन के पूर्व पण्डित प्रशांतकुमारजी शास्त्री की कक्षा का लाभ मिला।

प्रतिदिन सायंकाल सामूहिक जिनेन्द्र भक्ति होती थी।

5. भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ परमागम मंदिर में प्रात: पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री के एवं रात्रि में पण्डित संतोषकुमारजी विदिशा के समयसार पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

इसी बीच दिनांक 15 मार्च को मंदिर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर पंचपरमेष्ठी मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित नीरजकुमारजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये।

ज्ञातव्य है कि पण्डित संतोषकुमारजी विदिशा के प्रात:कालीन प्रवचन सीमन्धर जिनालय, देवनगर में होते थे।

6. जनता कॉलोनी (जयपुर) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री शाहगढ़ द्वारा विविध विषयों पर हुई तत्त्वचर्चा का लाभ उपस्थित जन-समुदाय को मिला।

ज्ञातव्य है कि यहाँ पर्व के उपरान्त ही बच्चों में धार्मिक संस्कार डालने हेतु दैनिक पाठशाला का शुभारंभ किया गया। लगभग 15-20 छात्र प्रतिदिन उत्साहित होकर ज्ञानार्जन कर रहे हैं। **- नीलम जैन**

महत्त्वपूर्ण सूचना

ग्रीष्मावकाश के समय बालकों में जैनधर्म के प्रारंभिक ज्ञान, सदाचार एवं नैतिक शिक्षा के अध्यापन हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के पास अनेक स्थानों से विद्वानों की मांग आ रही है।

अत: जो भी समाज ग्रीष्मावकाश में अपने यहाँ विद्वान बुलाकर धार्मिक गतिविधियाँ संचालित करना चाहती हैं, वे शीघ्र हमें पत्र लिखें। समय पर पत्र आने पर ही उनके लिये विद्वानों की व्यवस्था की जा सकेगी।

- प्रबन्धक, पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन

27

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे .....)

तदनन्तर कुमार वसुदेव श्यामा द्वारा दी हुई 'पर्णलघ्वी' विद्या से आकाश से नीचे उतरकर चम्पानगरी के बाह्य उद्यान में कमलों के सरोवर के किनारे आ गये। वहाँ मानस्तम्भ आदि सहित भगवान वासुपूज्य का मन्दिर था। वसुदेव ने मन्दिर की वंदना की और वहीं ठहर गये। प्रात: मन्दिर का पुजारी आया। वसुदेव ने उससे पूछा ह्न ''यह कौन-सा देश है ? कौन-सी नगरी है ?'' उत्तर में पुजारी ने कहा ह्न''यह अंग देश एवं चम्पानगरी है।'' पुजारी ने पूछा ह्न ''आप ऐसा क्यों पूछ रहे हो ? क्या आप आकाश मार्ग से उतरे हैं ? वसुदेव ने कहा हाँ, दो यक्ष कुमारियों ने मेरा अपहरण कर लिया था; उनका आपस में झगड़ा होने से मैं आकाश से पृथ्वी पर आ पड़ा हूँ। ऐसा कह कर वसुदेव ने ब्राह्मण का वेष धारणकर उस चम्पानगरी में प्रवेश किया। वहाँ उन्होंने जहाँ-तहाँ मनुष्यों को वीणा हाथों में लिए देखकर पूछा ह्न ''ये लोग इसतरह वीणा हाथों में लिए इधर-उधर क्यों घूम रहे हैं ?''

उत्तर में ब्राह्मण ने कहा ह्न ''इस नगरी में एक चारुदत्त सेठ रहता है, उसकी गंधर्वसेना पुत्री है, वह सौन्दर्यवान है एवं गन्धर्व विद्या में अति निपुण है उसने यह नियम किया है कि जो मुझे गंधर्व शास्त्र में संगीतशास्त्र में जीतेगा, वही मेरा पति होगा। बस उसी को जीतने के प्रयोजन से ये लोग नाना देशों से आये हैं। रूप-लावण्य और मृगनेत्री मनोहर कन्या ने समस्त संसार को व्यामोहित कर रखा है। अब तक अनेक प्रतियोगितायें हो चुकी हैं, उन सभी में उसी कन्या की विजय हुई। यह जानकर वसुदेव ने यह खोज की कि इस ग्राम में संगीत विद्या में निपुण कौन है ? जानकारी मिली कि इस समय सुग्रीव संगीत का सबसे अधिक प्रसिद्ध विद्वान है।

वसुदेव सुग्रीव के पास गये और नमस्कार कर बोले ह्न ''मैं गौतम गोत्री हूँ, आपको अपना संगीत विद्या का गुरु बनाना चाहता हूँ, कृपया मुझे अपना शिष्य बनाकर कृतार्थ करें।''

सुग्रीव ने योग्य पात्र जानकर उसे संगीत विद्या सिखाने की स्वीकृति दे दी। व्युत्पन्न होने से अल्पकाल में ही वसुदेव सम्पूर्ण विद्या में पारंगत हो गया तथा अवसर आने पर वह भी गंधर्वसेना की संगीत प्रतियोगिता में सम्मिलित हो गया। क्रम आने पर वह वसुदेव वीणा बजाने के आसन पर आसीन हुआ। वसुदेव को अनेक वीणायें दी गईं, पर वसुदेव ने उन सबमें कोई न कोई दोष दिखाकर उन्हें निरस्त कर दिया। अन्त में गंधर्वसेना ने अपनी सत्तरह तारों वाली सुधोषणा नाम की वीणा उन्हें दी। उसे बजाकर प्रसन्न होते हुए वे बोले कि यह वीणा बहुत अच्छी है, निर्दोष है। हे गन्धर्वसेना ! बोलो तुम्हें कौन-सी गदा ध्वनि पसन्द है ? जो तुम कहो, मैं वही बजा दूँगा।

गंधर्वसेना ने कहा ह्न बलि को बांधते समय देवदूत नारद आदि ने विष्णुकुमार मुनि का जिस रूप में स्तवन किया था, जिस वीणा से जो संगीत सुनाया था, आप वही गीत गायें, वैसा ही संगीत सुनायें।

वसुदेव ने गंधर्वसेना के कहे अनुसार विषयवस्तु प्रस्तुत करने से पूर्व प्रथम तो सम्पूर्ण संगीत विद्याओं का विशद वर्णन कर सम्पूर्ण सभासदों को भाव-विभोर कर दिया, तत्पश्चात् गंधर्व शास्त्र के विस्तार के साथ जब वसुदेव ने यथायोग्य अवसर के अनुकूल गाना गाया तो सभी श्रोता आश्चर्यचकित रह गये। लोग कहने लगे कि 'ये क्या देवदूत नारद है ? या कोई गंधर्वदेव है ? अथवा किन्नरदेव है ? क्योंकि ऐसी वीणा बजाना किसी दूसरे साधारण कलाकार को कहाँ से आ सकती ?

बलि को बाँधते समय नारद आदि ने विष्णुकुमार मुनि का जिसरूप में स्तवन किया था, वसुदेव ने वीणा बजाकर वही गीत गाया, जिसे सुनकर गन्धर्वसेना भी आश्चर्यचकित हो गई।

इसप्रकार जब सभा में वसुदेव ने विजय पताका ग्रहण की तब चारों ओर से साधु-साधु के शब्द गूँज उठे। स्वाभाविक अनुराग से भरी गंधर्वसेना ने सभा में ही वसुदेव के गले में वरमाला डालकर, उनका पति के रूप में वरण कर लिया तथा चारुदत्त सेठ ने सन्तुष्ट होकर अपनी कन्या गंधर्वसेना का विधिवत विवाह वसुदेव से कर दिया।

वसुदेव के संगीत गुरु सुग्रीव और यशोग्रीव ने भी अपनी-अपनी कन्यायें वसुदेव को प्रदान कर प्रसन्नता का अनुभव किया। पुण्यवान और परोपकारी पुरुष जहाँ भी जाते हैं, वहीं उन्हें समस्त प्रकार से अनुकूलता प्राप्त होती है। दो हाथ यदि उन्हें धक्का देते हैं, गिराते हैं तो हजार हाथ उन्हें झेलने को तैयार मिलते हैं। यह लोक प्रचलित उक्ति कुमार वसुदेव के जीवन के उतार-चढ़ाव के द्वारा साकार होती देखी जा सकती है; अत: हमें सदैव धर्म की शरण में रहकर सदैव स्व-पर कल्याण में ही अपना जीवन समर्पित करना चाहिए।

धर्म में श्रद्धा रखनेवाले गुणवान एवं पुण्यवान पुरुष कुमार वसुदेव की विचित्र घटनाओं से हमें यह बात सीखने को मिलती है। वसदुेव जहाँ भी पहुँचे, उन्हें सब जगह आदर सम्मान तो मिला ही, लोगों ने अपनी कन्यायें प्रदान कर उन्हें अपना जमाता भी बनाया। **(क्रमश:)**

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

10

कर्तृत्वबुद्धि छूट जाना ही क्रमबद्ध का प्रयोजन है। पर में तो कुछ कर नहीं सकता और अपने में जो होना हो वह होता है, यदि अपने में भी राग होना है, तो वह होता है, जो होता ही है, उसे करना क्या ? अत: राग में से भी कर्तृत्वबुद्धि छूट गई, भेद और पर्याय के ऊपर से भी दृष्टि हट गई तब क्रमबद्ध की प्रतीति हुई। क्रमबद्ध की प्रतीति होते ही ज्ञातादृष्टा हो गया। निर्मल पर्याय करूँ - ऐसी बुद्धि भी छूट गई। राग को करूँ यह बात तो एक ओर रह गई; किन्तु ज्ञान करूँ यह बुद्धि भी छूट जाती है। कर्तृत्वबुद्धि छूट जाती है और अकेला ज्ञान रह जाता है। जिसे राग करना है, राग रोकना है, उसे यह क्रमबद्ध की बात नहीं जमती है। राग करो और राग छोड़ो यह बात भी आत्मा में है ही नहीं। आत्मा तो मात्र ज्ञानस्वरूप है।

शुद्ध चैतन्य का ज्ञान शुद्ध दशा में हुआ, उस काल का ज्ञान ज्ञायक को भी जानता है और रागादि को भी जानता है; तथापि वह ज्ञान पर का नहीं है। वह ज्ञान तो ज्ञान का ही है। चैतन्यस्वरूप की दृष्टि होने पर पर्याय में स्व-पर का ज्ञान प्रगट हुआ, तब पर का जानना हुआ। वह राग का ज्ञान नहीं है; किन्तु ज्ञान का ही ज्ञान है।

पर की पर्याय जो होनेवाली हो, वह तो होती ही है, उसे मैं क्या करुंगा ? और मुझमें जो राग आता है, वह भी आनेवाला ही है, उसे क्या लाऊँगा ? तथा मुझमें जो शुद्ध पर्याय आना है, उसे मैं लाऊँ - ऐसे विकल्प से भी क्या ? अपनी पर्याय में होनेवाला राग और होनेवाली शुद्ध पर्याय के कर्तृत्त्व का विकल्प आत्मा के स्वभाव में है ही नहीं। अकर्तृत्त्व का आना ही मोक्षमार्ग का पुरुषार्थ है।

शरीर तो एक ओर रह गया; परन्तु खण्ड-खण्ड ज्ञान जिस ज्ञान पर्याय में होता है, वह भी ज्ञायक का परज्ञेय है; फिर उस भावेन्द्रिय को किस प्रकार जीतना कहा जाय? कि प्रतीति में आनेवाली एक अखण्ड चैतन्यशक्ति, त्रैकालिक ज्ञायकशक्ति, ध्रुवशक्ति के द्वारा जो अपने से भिन्न है, उसे सर्वथा भिन्न करना भावेन्द्रिय को जीतना होता है। राग एवं पुण्य-पाप के विकल्प की बात तो कहाँ रह गई; किन्तु ज्ञान की वर्तमान पर्याय में जो क्षयोपशम का अंश प्रगट है, उस भावेन्द्रिय को प्रतीति में आनेवाले अखण्ड एक ज्ञायकत्व द्वारा सर्वथा भिन्न जानो - उसका नाम भेदविज्ञान है।

जानने योग्य भी मैं, जाननेवाला भी मैं और अनन्त शक्तिरूप ज्ञाता भी मैं ही हूँ, तीनों मिलकर वस्तु तो एक ही है। पर का कर्ता तो कहीं रह गया; किन्तु पर का ज्ञाता भी मैं नहीं हूँ। स्वयं ही ज्ञेय है, स्वयं ही ज्ञान है और स्वयं ही ज्ञाता है। विषय-कषाय के परिणाम परज्ञेय हैं। वास्तव में तो आत्मा उनका ज्ञाता भी नहीं है।

यहाँ तो पर से अपने को समेट लेने की बात है; अत: कहते हैं कि छह द्रव्य ज्ञेय हैं - ऐसा भी नहीं है; क्यों कि छह द्रव्यों के कारण जानने की पर्याय नहीं हुई है; किन्तु अपने ज्ञान से ज्ञान की पर्याय हुई है; इसलिये ज्ञान की पर्याय ही ज्ञेय हुई है; किन्तु छह द्रव्य ज्ञेय नहीं हैं।

अहाहा ! चैतन्य सम्राट का स्वभाव तो देखो, कैसा अगम्य है ! केवलज्ञान की पर्याय हो या मिथ्यात्व की पर्याय हो अथवा सम्यग्दर्शन की पर्याय हो; किन्तु ज्ञायकभाव एकत्व नहीं छोड़ता, ज्ञायकभाव तो ज्ञायकरूप ही रहा है। निगोद की पर्याय अक्षर के अनन्तवें भाग रह गई है और केवलज्ञान की पर्याय अनन्त अविभागप्रतिच्छेद सहित पूर्ण प्रगट हुई; तथापि ज्ञायक चैतन्यज्योति एकत्त्व को नहीं छोड़ती। स्वर्ग, नरक, निगोदादि अनेक पर्याय में रहने पर भी चैतन्यज्योति एकत्त्व नहीं छोड़ती। नवतत्त्व में प्राप्त हुआ आत्मा अनेकरूप दिखाई देता है, अनेक स्वांग धारण करता है; तथापि चैतन्यज्योति एकत्त्व को नहीं छोड़ती। आर्त-रौद्र ध्यान के अनेकरूप विचित्र शुभाशुभ भावों के बन्धन में आने पर भी चैतन्यज्योति कभी एकत्त्व को नहीं छोड़ती।

अहाहा ! ज्ञानज्योति नवतत्त्वों की संतति में आने पर भी, अनेक स्वांग धारण करने पर भी अपना एकत्त्व नहीं छोड़ती। अहो ! जिसका क्षेत्र मर्यादित होने पर भी जिसके काल का अन्त नहीं है, जिसके गुणों का अन्त नहीं है - ऐसी अनन्तस्वभावी चैतन्यज्योति सदा एकरूप चैतन्यस्वरूप ही रही है। आत्मा वस्तु ही गंभीर स्वभावी है, उसकी गंभीरता भासित न हो तब तक सच्ची महिमा नहीं आती, उसकी गंभीरता भासने पर आत्मा की ऐसी महिमा आती है कि वह महिमा आते-आते विकल्प को लाँघ जाती है। विकल्प को तोड़ना नहीं पड़ता; किन्तु टूट जाता है और अतीन्द्रिय आनन्द का अनुभव होता है।

भाई ! यह वीतराग कथित तत्त्व की बातें अतिसूक्ष्म तथा अपूर्व हैं। जो पुण्य-पाप के भाव हैं, राग-द्वेष के भाव हैं, दया, दान, भक्ति, काम, क्रोधादि के भाव हैं - वे सब पुद्गल के परिणाम हैं। अहाहा ! प्रभु ! तेरी दशा में होने वाले दया, दान, काम, क्रोधादि के भाव वह तेरे नहीं; किन्तु पुद्गल के परिणाम हैं। तू तो आनन्दस्वरूप शांति का सागर है। आत्मा आनन्दस्वरूप है, वह दया, दान क्रोधरूप कैसे परिणमित होगा? भाई ! तेरा घर तो आनन्दस्वरूप है, उसमें स्थिर रहना वह तेरी वस्तु है। तू राग-द्वेष, सुख-दु:खरूप क्यों परिणमित होता है, वह तो पुद्गलकर्म का स्वाद है, वह तेरा स्वाद नहीं है।

भगवान महावीरस्वामी जन्मस्थली सम्बन्धी - विद्वत् परिषद का प्रस्ताव

जैनाचार्यों ने जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर की जन्मस्थली कुण्डलपुर (विदेह) को मान्य किया है। आचार्य पूज्यपाद की निर्वाण भक्ति, आचार्य जिनसेन के हरिवंशपुराण, आचार्य गुणभद्र के उत्तरपुराण, श्री असग के वर्धमानचरित, आचार्य दामनन्दि के पुराणसार संग्रहान्तर्गत वर्धमानचरित, विबुध श्रीधर के वड्ढमाणचरिउ, महाकवि पुष्पदन्त के वीरजिणिंदचरिउ, आचार्य सकलकीर्ति के वीरवर्धमानचरित, मुनिधर्मचंद के गौतमचरित्र एवं पण्डित आशाधर के त्रिपष्ठिस्मृतिशास्त्र से भी तीर्थंकर महावीर की जन्मस्थली कुण्डलपुर (विदेह) ही सिद्ध होती है। आचार्य वीरसेन, आचार्य गुणभद्र, महाकवि विमलसूरि, आचार्य रविषेण आदि जिन-जिन पूर्वाचार्यों ने मात्र कुण्डलपुर लिखा है उसका तात्पर्य कुण्डलपुर (विदेह) ही है।

वर्तमान समय में आचार्य ज्ञानसागर ने अपने महाकाव्य 'वीरोदय' में तथा आर्यिका ज्ञानमती व आर्यिका चन्दनामती ने अपनी पूर्व रचनाओं में वैशाली स्थित कुण्डपुर (विदेह) को ही भगवान महावीर की जन्मस्थली स्वीकार किया है।

भारत सरकार, बिहार सरकार, अ. भा. दि. जैन क्षेत्र कमेटी तथा अन्य संस्थाओं, जैन-जैनेत्तर इतिहासज्ञों, शिक्षाविदों, पुरातत्त्वविदों, मनीषी लेखकों ने वैशाली स्थित कुण्डलपुर (विदेह) को ही भगवान महावीर की जन्मस्थली स्वीकार किया है। यह स्थान कुण्डलपुर (विदेह) या कुण्डग्राम या वर्तमान में मुजफ्फरपुर जिले के वैशाली निकटस्थ वसाढ़ नगर के समीप वासोकुण्ड है। लोक परम्परा से आज भी यहाँ की ढ़ाई बीघा जमीन को भगवान महावीर की जन्मस्थली होने के कारण पवित्र मानकर 'अहल्य' (जिस भूमि पर खेती हेतु हल न चलाया जाये) माना जाता है एवं दीपावली के दिन दीपक जलाया जाता है।

उक्त सन्दर्भों के प्रकाश में श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद आज दिनांक 8 फरवरी, 2003 शनिवार को श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, सैक्टर-10, फरीदाबाद में आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव के पावन अवसर पर सम्पन्न अपनी बैठक में कुण्डलपुर (विदेह) (वासोकुण्ड वैशाली) को ही भगवान महावीर की जन्मस्थली की पुष्टि करती है। शासन तथा समस्त जैन समाज से अनुरोध है कि सभी सद्भावना एवं परस्पर सहयोगपूर्वक इसके विकास में अपना सहयोग देवें।

प्रस्तावक - डॉ. सुदर्शनलाल जैन वाराणसी, **अनुमोदक** - डॉ. एस.पी. पाटील धारवाड़, प्रा. कुन्दनलाल जैन दिल्ली, डॉ. गंगाराम गर्ग भरतपुर, पं. विमलकुमार सोंरया टीकमगढ़, डॉ. सुपार्श्वकुमार जैन बड़ौत, श्री अनूपचन्द जैन ऐड. फिरोजाबाद, आचार्य जिनेन्द्रकुमार जैन सासनी।

- डॉ. सत्यप्रकाश जैन

महामंत्री, श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद्

समन्तभद्र शिक्षण-संस्थान का शुभारंभ

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी में श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा जुलाई 2003 से कक्षा 6 से 8 तक के आत्मार्थी विद्यार्थियों के लिये समन्तभद्र शिक्षण संस्थान का शुभारंभ किया जा रहा है। इच्छुक विद्यार्थी विशेष जानकारी हेतु निम्न पते पर सम्पर्क करें। **- मंत्री, श्री प्रेमचन्द मस्तांई**

बस स्टेण्ड के पास, मु.पो. घुवारा, जिला - छतरपुर (म.प्र.)
फोन नं. (07689) 255732

पंचमेरु नन्दीश्वर विधान सानन्द सम्पन्न

देवलाली : यहाँ पूज्यश्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली में श्रीमती कनकमालाबेन जयकुमारजी जैन (दिल्ली वाले) सोनगढ़ की तरफ से दिनांक 11 से 18 मार्च तक श्री पंचमेरु नन्दीश्वर विधान का आयोजन किया गया। जिसमें अनेक विद्वानों का लाभ समाज को मिला।

इस अवसर पर परमागम मंदिर में विधान के पश्चात् पूज्यगुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचन एवं अनेक विद्वानों के प्रवचन हुये। दोपहर में पहला प्रवचन पण्डित श्री दिनेशभाई शहा एवं दूसरा प्रवचन पण्डित श्री अभयकुमारजी शास्त्री का होता था।

सायं भक्ति के पश्चात् प्रतिदिन डॉ. उज्ज्वलाबेन की कक्षा चलती थी। सायंकालीन प्रवचनों में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद के प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।

इसी अवसर पर दिनांक 14 मार्च को ब्र. शांताबेन की 84 वीं जन्मजयन्ती मनाई गई, जिसमें ब्र. धन्यकुमारजी बैलोकर, श्री कान्तिभाई मोटानी, श्री सुमनभाई दोषी, ब्र. रमाबेन पारेख तथा श्री मुकुन्दभाई खारा ने श्रद्धा-सुमन अर्पण कर गुणानुवादरूप वक्तव्य दिया। **- मनीष जैन, रहली**

वैराग्य समाचार

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के भूतपूर्व छात्र सौरभ शास्त्री फिरोजाबाद के दादा पाण्डे रिखबदासजी जैन फिरोजाबाद का दिनांक 21 मार्च को शान्त परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। आप तत्त्वरुचिवंत, स्वाध्यायी थे।

ज्ञातव्य है कि विगत शीतकालीन अवकाश के अवसर पर आपके द्वारा वृहद्स्तर पर सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया था।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही मंगल कामना है।

निबन्ध प्रतियोगिता हेतु प्रविष्टियाँ भेजें

पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की 114 वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर **'कानजीस्वामी एवं उनकी आध्यात्मिक क्रांति'** विषय पर एक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है।

प्रतियोगिता में 16 वर्ष से 50 वर्ष तक के कोई भी मुमुक्षु भाग ले सकते हैं। निबन्ध लगभग 1500 शब्दों में टंकित अथवा स्वच्छ हस्तलिखित रूप में दिनांक 20 अप्रैल तक प्राप्त हो जाना चाहिये। प्रतियोगिता का परिणाम 21 अप्रैल से 3 मई तक आयोजित पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के जन्मजयन्ती महोत्सव के दौरान घोषित किया जायेगा।

पुरस्कार राशि क्रमशः 1001/-, 751/-, 501/- रुपये रखी गई है। पाँच सांत्वना पुरस्कार भी दिये जावेगें। निबन्ध हिन्दी अथवा गुजराती भाषा में लिखे जा सकते हैं।

- मनीष शास्त्री रहली
संयोजक, निबन्ध प्रतियोगिता,
पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, लामरोड,
कहाननगर, देवलाली-नासिक (महा.)

पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न

जयपुर : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में विगत सत्र 2002-03 के अंतर्गत आयोजित विविध धार्मिक एवं लौकिक गतिविधियों (17 रविवारीय साप्ताहिक गोष्ठियाँ वाद-विवाद, तात्कालिक भाषण, भक्ति संध्या, निबन्ध, कवि-सम्मेलन आदि साहित्यिक एवं क्रिकेट, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज आदि खेलकूद प्रतियोगिताओं) का पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 21मार्च को आयोजित किया गया।

इन समस्त प्रतियोगिताओं में विजेता तथा उप-विजेता छात्रों को प्रमाण-पत्र एवं राशि देकर पुरस्कृत किया गया।

समारोह की अध्यक्षता पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा ने की।

पुरस्कार छात्रों को पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, श्री मोहनलालजी सेठी एवं श्री ताराचन्दजी सौगानी के करकमलों से प्रदान किये गये।

इस अवसर पर पंचवर्षीय कार्यकाल के आधार पर चिन्मय जैन पिड़ावा, मनोज जैन अभाना एवं जितेन्द्र राठी पारशिवनी (नागपुर) को इस वैच के श्रेष्ठ विद्यार्थियों के रूप में चुना गया।

'आदर्श छात्र' पुरस्कार से सम्मानित

लाडनूं (राज.) : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के भूतपूर्व छात्र श्री सुमतकुमार जैन बरा को जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्व विद्यालय) ने अपने 13 वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय के 'आदर्श-छात्र पुरस्कार' से सम्मानित किया।

यह पुरस्कार पद्मश्री से सम्मानित महाबली सतपालजी के करकमलों से प्रदान किया गया।

आपको श्री टोडरमल स्मारक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

अध्यात्म गंगा प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

पर्युषण पर्व के अवसर पर अ. भा. जैन युवा फैडरेशन द्वारा आयोजित 'अध्यात्म गंगा प्रतियोगिता' का परिणाम घोषित कर दिया गया है।

ज्ञातव्य है कि प्रतियोगिता में चारों अनुयोगों से संबंधित 201 प्रश्न पूँछे गये थे ; जिसमें सम्पूर्ण भारत से कुल 3421 उत्तर प्रतियाँ प्राप्त हुईं। इसमें 199 अंक प्राप्त करने वाले तीनों प्रतियोगियों को प्रथम घोषित किया गया। द्वितीय पुरस्कार हेतु 195-198 अंक प्राप्त करने वाले एवं तृतीय पुरस्कार हेतु 190-194 अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों में से निम्न को ड्रा द्वारा विजयी घोषित किया गया है । 100 सांत्वना पुरस्कार भी निकाले गये। सभी पुरस्कार उनके पते पर भेज दिये गये हैं।

पुरस्कार डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित पूनमचंदजी छावड़ा एवं पण्डित शांतिकुमारजी पाटील की उपस्थिति में घोषित किये। प्रतियोगिता के निर्देशक पण्डित संजीवजी गोधा तथा संयोजक जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर, सुदीप तलाटी घाटोल, अनिल टाया मुंबई, मनोज जैन अभाना, रीतेश जैन अहमदाबाद, अजीत जैन गढ़खेड़ा थे। विशेष सहयोग राहुल जैन बिनौता का रहा।

प्रथम स्थान - 1. कु. राखीजैन पुत्री श्री महेन्द्रजी जैन, जबलपुर
2. डॉ. महावीर प्रसाद जैन पुत्र श्री नेमीचंद्रजी जैन, उदयपुर
3. कु. निधि जैन पुत्री श्री ऋषभकुमारजी जैन, अभाना

द्वितीय स्थान - 1. कु.डिम्पल जैन पुत्री श्री विनोदजी जैन, फिरोजाबाद
2. श्रीमती उर्मिला जैन पत्नी श्री भरतकुमारजी जैन, अहमदनगर
3. श्रीमती विमला पटवारी पत्नी श्री नवीनचंदजी, अहमदाबाद
4. कुमारी रेणु जैन पुत्री श्री फतहचंदजी जैन, शिवपुरी

तृतीय स्थान - 1.श्रीमती कैलाश शाह पत्नी श्री विनोदजी शाह, मुंबई
2. श्रीमती सुषमा जैन पत्नी श्री धर्मपालजी जैन, खतौली
3. श्रीमती वसन्तीदेवी पचोरी पत्नी श्री नेमीचंदजी, उदयपुर
4. कु. प्रीतिबाला जैन पुत्री श्री रोशनलालजी जैन, उदयपुर
5. श्रीमती सुषमा जैन पत्नी श्री कमलेशजी जैन, सिलवानी
6.श्रीमती किरण जैन केरोत विद्यानगर, उदयपुर

नोट : प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले अंक में प्रकाशित होगें।

भक्तामर मण्डल विधान सम्पन्न

जयपुर : आद्य तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के जन्मकल्याणक एवं दीक्षाकल्याणक के पावन अवसर पर बुधवार, दिनांक 26 मार्च 2003 को श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्री चांदमलजी जैन एवं श्री डी. आर. जैन के सहयोग से श्री भक्तामर मण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री ललितपुर, पण्डित चिन्मयकुमारजी शास्त्री पिड़ावा एवं उपाध्याय कनिष्ठ के विद्यार्थियों ने सम्पन्न कराये।

विधान में लगभग 500 मुमुक्षुओं ने भाग लिया। इस अवसर पर प्राप्त दान राशि को अकाल पीड़ितों की सहायतार्थ भेजी जायेगी।

तत्वचर्चा

समयसार का सार 65

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

दूसरे अंग का नाम है – निःकांक्षित अंग। इसका अर्थ है सांसारिक भोगों की कोई कांक्षा नहीं होना, इच्छा नहीं होना। इच्छा से तात्पर्य यहाँ चारित्र गुण वाली इच्छा नहीं, बल्कि श्रद्धा गुण वाली इच्छा है। सांसारिक भोगों में सुखबुद्धि नहीं होना, इसका नाम निःकांक्षित अंग है।

तीसरा अंग है निर्विचिकित्सा अंग। विचिकित्सा का अर्थ है घृणा। सम्यग्दृष्टि को किसी भी पदार्थ में घृणा नहीं होती है।

पुरुषार्थसिद्धयुपाय में भी लिखा है कि आत्मा के क्रोधादिक भावों में और पुरीषादिक द्रव्यों में अर्थात् मल–मूत्रादि में ग्लानि नहीं होना ही निर्विचिकित्सा अंग है।

छहढाला में ऐसा लिखा है –

''मुनितन मलिन न देख घिनावैं''

मुनियों के मलिन शरीर को देखकर घृणा नहीं करना निर्विचिकित्सा अंग है। यहाँ पर विशेषरूप से मुनियों के मलिनतन की बात कही है; क्योंकि गृहस्थ तो प्रतिदिन नहाते हैं; अतः उनके मलिनता होने की संभावना कम है; किन्तु वे मुनिराज जिन्होंने नहीं नहाने का व्रत लिया है, जिन्होंने अदंत–धोवन अर्थात् दातुन नहीं करने का नियम लिया है, उनका तो शरीर मैला ही रहनेवाला है – इसलिए ऐसा लिखा।

गृहस्थ मिथ्यादृष्टियों के क्रोधादिक भावों में भी घृणा नहीं करना। जगत में जो वस्तु ग्लानि की है, उसमें उन सम्यग्दृष्टि जीवों को ग्लानि भाव नहीं रहता है। किसी के गाली देने पर ज्ञानीजन तो यही देखते हैं कि यह तो कषाय में अपने आप ही जल रहा है, यह तो दया का पात्र है, क्रोध का पात्र नहीं।

तत्त्वज्ञान के संबंध में दृष्टि में मूढ़ता नहीं होना या सही बात समझ में आना ही अमूढदृष्टि अंग है।

उपगूहन अंग के दो अर्थ होते हैं। पहला अपने गुणों की वृद्धि तथा दूसरे के दोषों को छिपाना। छिपाने का अर्थ उनकी तरफ ध्यान नहीं देना है। पर्याय में जो दोष होते हैं; वे ध्यान देने योग्य नहीं हैं। उन दोषों के संबंध में दुनिया को नहीं बताना। ऐसी वृत्ति सम्यग्दृष्टि की होती है, उसका नाम उपगूहन अंग है।

यदि सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र से हम स्वयं डिग रहे हों तो स्वयं को और यदि हमारा कोई साधर्मी डिग रहा हो तो उसे समझा–बुझाकर जैसे भी संभव हो, उसी में स्थिर कर देना ही स्थितिकरण अंग है।

साधर्मियों से हार्दिक प्रीति होने का नाम वात्सल्य अंग है। भगवान की दिव्यध्वनि का जो सार है, वह जन–जन तक पहुँचे तथा मेरे गुणों में अर्थात् पर्याय में निरन्तर निर्मलता प्रकट हो – ऐसा भाव निरन्तर रहना प्रभावना अंग है।

ऐसे आठ अंग सम्यग्दृष्टि की परिणति में प्रगट हो जाते हैं ऐसे आठ अंगों के धनी सम्यग्दृष्टि भोग के काल में भी निर्जरा करते हैं। यही निर्जरा अधिकार का सार है। यह करणानुयोग सम्मत बात है।

यदि एक बार सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो गई तो कर्मों का नाश स्वयमेव निरन्तर होने लगेगा और अनंत संसार के कारणभूत कर्मों का बंध नहीं होगा। कदाचित् पूर्वाभ्यास के कारण, पूर्वकर्म के उदय के कारण तेरे जीवन में जितनी पवित्रता होनी चाहिए, उतनी पवित्रता नहीं भी हो; तब भी तू निरन्तर मोक्षमार्ग की ओर दौड़ेगा, अनंत अतीन्द्रिय आनन्द की ओर दौड़ेगा। यही निर्जरा अधिकार का भाव है।

उन्नीसवाँ प्रवचन

समयसार परमागम की चर्चा चल रही है, उसमें हमने यहाँ जीवाजीवाधिकार से लेकर निर्जरा अधिकार तक की चर्चा की।

जीवाजीवाधिकार से संवर अधिकार तक भेदविज्ञान की चर्चा है; जिसमें स्त्री, पुत्र, मकान, जायदाद, रुपया, पैसा, शरीर और पर के लक्ष्य से उत्पन्न होनेवाले मोह–राग–द्वेष के परिणाम तथा निर्मल पर्यायें, गुणभेद और प्रदेशभेद – ये सब मैं नहीं हूँ, ये सब मेरे नहीं हैं, मैं इनका कर्ता–भोक्ता नहीं हूँ, इसप्रकार का भेदविज्ञान कराया।

जीवाजीवाधिकार में इन सबमें एकत्व और ममत्व छुड़ाया।

कर्त्ताकर्माधिकार में इन सबसे कर्तृत्व और भोक्तृत्व के भाव को छुड़ाया। फिर पुण्य–पाप अधिकार में यह बताया है कि पाप के समान पुण्य भी मुक्ति के मार्ग में हेय है, बंध का कारण है; मुक्ति का कारण नहीं है।

आस्रवाधिकार में यह बताया है कि पुण्य और पाप दोनों आस्रव भाव हैं, आत्मा नहीं और ज्ञानी सम्यग्दृष्टि के संयोग में भोग दिखाई भी दें तो भी उन्हें ऐसे कर्मों का आस्रव नहीं होता है, जो अनंत संसार के कारण हैं।

संवर अधिकार में इन भावों से भेदविज्ञान कराके उस भेदविज्ञान का अभिनन्दन किया। निर्जराधिकार में यह बताया है कि सम्यग्दृष्टि का पर पदार्थों में एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व और भोक्तृत्व नहीं होने से भोग भोगते हुए भी उसके निर्जरा होती है, उसके भोग निर्जरा के हेतु हैं, इस बात को युक्ति और आगम से विस्तार से समझाया है। **(क्रमशः)**

स्वास्थ्य चर्चा –

रामबाण औषधि है घरेलू मट्ठा

चिकित्सकों का विचार है कि दूध तथा दही की अपेक्षा मट्ठा कई दृष्टिकोणों से स्वास्थ्य के लिये उपयोगी है। यह हलका तथा सुपाच्य होने के साथ-साथ शरीर में स्थित कई विजातीय द्रव्यों को निकालने में दूध-दही की तुलना से अधिक सक्षम है। इसे त्रिदोष नाशक पथ्यों में उत्तम, अजीर्णता दूर करनेवाला, रुचिकर, बुद्धिवर्धक, अर्श (बवासीर) और उदर विकार नाशक बताया गया है। यह कई रोगों में पथ्य आहार सिद्ध होता है। मट्ठे में विटामिन बी-2 लगभग 30 मिलिग्राम प्रति 100 ग्राम तथा अत्यल्प मात्रा में विटामिन-ए भी पाया जाता है। वैसे तो भैंस तथा बकरी के दूध से भी से ज्यादा मट्ठा बनाया जाता है; किन्तु गौ-दधि से बनाया मट्ठा उत्तम बलकारक, स्वादिष्ट, रुचिकर, पाचक, स्निग्ध, पौष्टिक तथा वातनाशक होता है। आयुर्वेद के अनुसार मट्ठा पाँच तरह का होता है –

घोल : दही में पानी मिलाए बिना ज्यों का त्यों मथने पर मट्ठे को घोल कहते हैं। इसमें बूरा अथवा चीनी मिलाकर पीये तो इसका स्वाद पके हुए आमों की तरह होता है। इसे युवाओं के लिए अधिक गुणकारी माना जाता है।

मथित : दही के ऊपर से मलाई हटाकर बिना पानी मिलाए मथने से जो घोल तैयार होता है, उसे मथित कहते हैं। यह पाचक, अग्नि बढ़ानेवाला, पोषक, उष्णीय, वातनाशक और ग्रहणी लोगों के लिए सेवन योग्य है।

तक्र : दही में चौथाई भाग पानी मिलाकर मथने से तैयार होता है। इसी को मट्ठा कहते हैं। यह सबसे गुणकारी तथा सेवन योग्य है।

उदश्वित : दही में आधा भाग पानी मिलाकर मथने से तैयार मट्ठा उदश्वित कहलाता है। यह कफकारी, बलवर्धक तथा वातनाशक होता है।

छाछ : दही को मथने से निकले मक्खन को निकालकर पुनः पानी मिलाकर मथने से छाछ बनती है। यह शीतल, हलकी, पित्तनाशक, प्यास तथा वात को नष्ट करने वाली होती है। नमक डालकर पीने से पाचन शक्ति बढ़ाती है। पेचिस में भी लाभदायक है।

बबासीर, चर्मरोग, जलीदार, दमा, मधुमेह तथा संधिवात में भी मट्ठा कल्प बहुत उपयोगी है। आइये देखते हैं मट्ठे के औषधीय गुणों के उपयोग –

अजमोदादि : अजमोदा, मोचरस, शुण्ठी, धाय के फूल – इन चारों को पीसकर चूर्ण बनाकर गौ-दधि के साथ अच्छी तरह फेंटकर सेवन करने से पानी की धारा के समान अतिसार (पतला दस्त) ठीक हो जाता है।

गैस और बवासीर : गैस और बवासीर (अर्श) के लिए मट्ठे से अच्छी और कोई औषधि नहीं है। मट्ठे में हींग, जीरा और सेंधा नमक डालकर पीने से उक्त रोगों में लाभ होता है। ऐसा मट्ठा रुचिकर, पौष्टिक, बलवर्धक और वातशूल को नष्ट करता है।

पाण्डुरोग या पीलिया : प्रदूषित पानी तथा अन्य कारणों से उत्पन्न होने वाला रोग पीलिया है। इससे शरीर पीला, निर्बल, निस्तेज तथा कान्तिहीन हो जाता है। गौ-दधि से बनायी गई ताजी छाछ में चित्रक का चूर्ण डालकर प्रातः सेवन करने से पीड़ित व्यक्ति को काफी फायदा होता है।

जठराग्नि : अमाशय के विकारों के कारण पाचन संबंधी रस (इंजाइम) कम उत्पन्न होते हैं। जिससे भूख कम लगती है। दिन भर अरुचि, जी-मचलाना, अपच, विषमयज्वर, कब्ज तथा अतिसार के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। ऐसे रोगी का पित्त तथा वात कुपित हो जाता है। जिससे वह दिनों दिन कमजोर होता जाता है। शीतकाल में और ग्रीष्मकाल में छाछ का सेवन करने से यह रोग हमेशा के लिये नष्ट हो जाता है।

आँतों के कीड़े : यह आजकल सामान्य बीमारी है। कृमिनाशा के लिये एक दिन पहले का तैयार किया गया (बासा) मट्ठा शक्कर मिलाकर पीने से आँतों के सभी कीड़े एक जगह इकट्ठे हो जायेंगे। फिर दो दिन बाद ताजे मट्ठे में नमक और हल्की मात्रा में पीसी हुई काली मिर्च मिलाकर सेवन करने से इकट्ठे हुए कीड़ों का सफाया हो जायेगा।

एक्जीमा या छाजन : एक्जीमा ग्रस्त भाग पर नीम की पत्तियों (कोपलें) की छाछ से पीसकर दिन में 3 बार लेप करने से काफी फायदा होता है। ताजा मट्ठा बिना नमक व शक्कर मिलाकर पीयें। एक्जीमा धीरे-धीरे ठीक हो जायेगा।

चेहरे की झाइयाँ : चेहरे की झाइयों को दूर करने के लिए एक दिन पहले तैयार किया गया मट्ठा और बारीक बेसन को मिलाकर पेस्ट बना लें और रात्रि में सोते समय इसका चेहरे पर हल्का-हल्का लेप करें। सुबह स्वच्छ जल से चेहरे को धो लें। ऐसा करने से कुछ दिनों में झाइयाँ मिट जायेगी और चेहरा कान्तिपूर्ण हो जायेगा।

कब्ज : नियमित रूप से मट्ठा सेवन करनेवाले को कब्ज की शिकायत नहीं रहती।

पथ्य : रात्रि के समय दही या मट्ठा सेवन नहीं करना चाहिये। दही को गर्म करके भी सेवन नहीं करना चाहिये।

---

170 तीर्थंकर विधान सानन्द सम्पन्न

पिड़ावा : यहाँ दिनांक 16 से 18 मार्च 2003 एक सौ सत्तर तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित जयकुमारजी बांरा के सुबह-शाम समयसार पर मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त एक दिन डॉ. वि.धनकुमारजी शास्त्री के समयसार कलश पर सारगर्भित प्रवचन का लाभ भी मिला ।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य स्थानीय विद्वान पण्डित धनसिंहजी के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

फैडरेशन की टेबल से -

बीते वर्ष फैडरेशन की शाखाओं द्वारा किये गये विशिष्ट कार्यों का ब्योरा इस कालम के अन्तर्गत प्रकाशित किया जा रहा है। सभी शाखाओं से एतदर्थ वार्षिक रिपोर्ट आमंत्रित है।

वर्ष 2002 में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की **टीकमगढ़** शाखा ने अपनी तत्त्वप्रचार की गतिविधियों को आगे बढ़ाते हुये निम्न उपलब्धियाँ अर्जित की –

यहाँ प्रतिदिन प्रात: एवं सायं सामूहिक स्वाध्याय के अतिरिक्त प्रतिदिन सायंकालीन पाठशाला का संचालन किया जाता रहा।

मुम्बई से संचालित ज्ञानयज्ञ योजना के अन्तर्गत निरन्तर शिक्षण एवं पठन-पाठन।

जुलाई माह में श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का आयोजन हुआ।

तीन बार तीर्थक्षेत्रों की सामूहिक यात्रा का आयोजन किया गया।

फैडरेशन के माध्यम से पुस्तकालय का संचालन किया गया।

वीतराग-विज्ञान बाल मण्डल का गठन किया गया; जिसमें 8 वर्ष से 18 वर्ष तक बालक-बालिकाओं को सदस्य बनाया गया। जिसके 70 सदस्यों के माध्यम से प्रत्येक रविवार को सामूहिक पूजन एवं दोपहर में गोष्ठी का आयोजन किया जाता है।

विगत वर्ष युवा फैडरेशन की महिला शाखा का पुनर्गठन किया गया।

साहित्य विक्रय केन्द्र का संचालन किया गया; जिसके माध्यम से विगत वर्ष में 45 हजार रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा। **– अरुण जैन**

अप्रैल माह में आनेवाली 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

1 अप्रैल – भगवान अनन्तनाथ का ज्ञान एवं मोक्ष कल्याणक तथा भगवान अरनाथ का मोक्ष कल्याणक

2 अप्रैल – भगवान मल्लिनाथ का गर्भकल्याणक

4 अप्रैल – भगवान कुन्थुनाथ का ज्ञानकल्याणक

7 अप्रैल – भगवान अजितनाथ का मोक्षकल्याणक

8 अप्रैल – भगवान संभवनाथ का मोक्षकल्याणक

13 अप्रैल – भगवान सुमतिनाथ का जन्म, ज्ञान व मोक्ष कल्याणक

15 अप्रैल – भगवान महावीरस्वामी का जन्म कल्याणक

16 अप्रैल – भगवान पद्मप्रभ का ज्ञानकल्याणक

18 अप्रैल – भगवान पार्श्वनाथ का जन्मकल्याणक

24 अप्रैल – भगवान मुनिसुव्रतनाथ का ज्ञानकल्याणक

25 अप्रैल – भगवान मुनिसुव्रतनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक

29 अप्रैल – भगवान धर्मनाथ का गर्भकल्याणक

30 अप्रैल – भगवान नमिनाथ का मोक्षकल्याणक

आगामी कार्यक्रम ....

बुन्देलखण्ड की धर्मनगरी बण्डा में पूज्य गुरुदेवश्री के प्रभावना योग से मुमुक्षुओं द्वारा एक नवीन जिनमंदिर का निर्माण हुआ है; जिसका **वेदी शिलान्यास** गुरुवार, दिनांक 17 अप्रैल से शनिवार, 19 अप्रैल तक होने जा रहा है।

इस अवसर पर श्री 1008 भगवान महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन होगा।

सम्पूर्ण कार्यक्रम बाल ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में पण्डित सुबोधकुमारजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न होंगे।

इस अवसर पर अनेक ख्यातिप्राप्त विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

सभी साधर्मी बन्धुओं से अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ लेने का हार्दिक अनुरोध है। **– मंत्री, राजकुमार जैन**

साहित्य प्रतिभा उपाधि से सम्मानित

श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय, जयपुर के भूतपूर्व छात्र प्रमोद जैन शाहगढ़ ने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, त्रिचूर (केरल) में आयोजित कविता रचना (संस्कृत), निबन्ध रचना (संस्कृत), प्रश्नोत्तरी (संस्कृत), कविता रचना (हिन्दी), कथा रचना (हिन्दी), काव्य परायण (हिन्दी) तथा तात्कालिक भाषण (हिन्दी) – इन 7 में प्रथम, तात्कालिक भाषण (अंग्रेजी) प्रतियोगिता में द्वितीय तथा तात्कालिक भाषण (संस्कृत) एवं अन्ताक्षरी में तृतीय स्थान प्राप्त किया। ऐसी बहुमुखी प्रतिभा को देखकर संस्थान ने इन्हें साहित्य प्रतिभा की उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया है।

श्री टोडरमल स्मारक परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाई !

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अप्रैल (प्रथम) 2003
J.P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर**, एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127